प्रश्नः

''यदि यीशु इतना भला मनुष्य था तो वह एक अपराधी की तरह ज़्यों मरा?''

उज़रः

कलवरी का ध्यान आते ही हम यह पूछने पर विवश हो जाते हैं कि ''यदि यीशु इतना भला मनुष्य था तो उसकी मृत्यु एक सामान्य अपराधी की तरह ज़्यों हुई?''

मोटी-मोटी आंखों वाली एक युवती ने एक बार मुझसे यह प्रश्न इस प्रकार पूछा: ''यदि यीशु का कोई अपराध नहीं था, तो उसे क्रूस पर ज़्यों चढ़ाया गया था? मुझे तो इसका कोई औचित्य नहीं लगता।'' प्रश्न तो सचमुच दमदार लगता है, है न?

पहली बात तो यह कि यह प्रश्न इसलिए अर्थपूर्ण है, ज़्योंकि यीशु एक भला मनुष्य *था।* इतिहास के लगभग सभी नायकों में कुछ न कुछ कमजोरी अवश्य रही है। वे महान तो थे, पर उनमें कुछ कमियां भी थीं। पर यीशु में ऐसी कोई कमी नहीं थी। किसी ने भी इस बात से इन्कार नहीं किया था कि वह एक भला मनुष्य था। विश्वास न करने वाले व्यज़्ति उसे कुछ असांसारिक मान सकते हैं या यह कि उसकी शिक्षाएं अव्यावहारिक हैं। पर कोई इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि वह एक *भला मनुष्य* था।

यह प्रश्न इसलिए भी महत्वपूर्ण है ज़्योंकि यीशु को एक सामान्य अपराधी की तरह क्रूस पर चढ़ाया गया था। प्राचीनकाल में बहुत से लोगों को क्रूस पर चढ़ाया जाता था। सिकन्दर महान ने सूर के लोगों के विरुद्ध एक अभियान में अपने एक हज़ार शत्रुओं को क्रूस पर चढ़ाया था। और जोसेफस के अनुसार, सज़र ईस्वी के अन्त में यरूशलेम पर कज़्जा करने के बाद, रोमियों ने उस नगर की दीवारों पर तीस हज़ार यहूदी पुरुषों को क्रूस पर चढ़ाया था।[1]

एक अर्थ में, यीशु की मृत्यु ''सामान्य'' अपराधी वाली नहीं थी। रोमी लोगों में, किसी को क्रूस पर चढ़ाना तो आम बात थी, परन्तु क्रूस पर केवल ''गुलामों, विदेशियों या निज़्न स्तर के अपराधियों'' को ही चढ़ाया जाता था। सामान्यतया रोमी नागरिकों को क्रूस पर नहीं चढ़ाया जाता था।[2] इसका अर्थ यह हुआ कि क्रूस पर ''सामान्य अपराधियों'' को नहीं बल्कि ''असामान्य अपराधियों'' को चढ़ाया जाता था। यह दण्ड मनुष्य जाति के सबसे निज़्न स्तर के लोगों के लिए निश्चित था। इन लोगों को असामान्य ढंग से लज्जाजनक, पीड़ादायक और तड़पा - तड़पाकर मृत्यु दी जाती थी।

हज़ारों लोगों को क्रूस पर यीशु की तरह ही मारा गया था। फिर उसे जो इतना भला मनुष्य था, समाज के दुष्ट लोगों की तरह ज़्यों मारा गया था?

साफ़ कहें तो यदि यीशु की मृत्यु उन लोगों की तरह ही होती जिन्हें क्रूस पर चढ़ाया जाता था तो हमारे लिए उसकी मृत्यु का कोई महत्व न रहता। मसीहियत की आशा इसी तथ्य पर है कि मसीह की मृत्यु बहुत पहलुओं से *विलक्षण* थी। आम तौर पर लगता है कि उसकी मृत्यु बहुत से दूसरे लोगों की तरह थी पर वास्तव में यह उनसे कहीं अलग थी।

यह एक निर्दोष व्यज़्ति की मृत्यु थी

यीशु की मृत्यु अलग थी ज़्योंकि यह एक निर्दोष मनुष्य की मृत्यु थी।

सुसमाचार की पुस्तकें यह स्पष्ट करती हैं कि यीशु ने ऐसा कुछ भी नहीं किया था जिससे उसे मृत्युदण्ड दिया जाता। *यीशु के शत्रुओं द्वारा दी गई झूठी गवाही आपस में मिलती नहीं थी* (मज़ी 26:59, 60)। यीशु इतना निर्दोष था कि झूठे लोगों को भी उस पर आरोप लगाने की कोई बात नहीं मिल सकी! *पिलातुस और हेरोदेस को भी जो रोमी अधिकारी थे, यीशु में कोई दोष नहीं मिला* (लूका 23:14, 15)। यदि यीशु के दोषी या निर्दोष होने के विषय में कोई वास्तविक निर्णय कर सकता था तो वह पिलातुस और हेरोदेस ही थे, और उन दोनों ने कहा था कि वह दोषी नहीं है! *पिलातुस की पत्नी ने कहा कि यीशु निर्दोष था!* उसने अपने पति से कहला भेजा: ''... कि तू उस धर्मी के मामले में हाथ न डालना ...'' (मज़ी 27:19)। *यीशु की मृत्यु पर उसे मारने वाले सूबेदार ने माना कि वह निर्दोष था*। उसकी मृत्यु को देखने के बाद, ''सूबेदार ने ... परमेश्वर की बड़ाई की, और कहा; निश्चय यह मनुष्य धर्मी था'' (लूका 23:47)। यदि यह कठोर मन सिपाही जो यीशु की मृत्यु के समय वहां था उसे निर्दोष मान सकता था, तो हमें भी मानना चाहिए कि वह निर्दोष था! *यीशु के साथ क्रूस पर चढ़े दो डाकुओं में से एक ने माना कि वह बिल्कुल निर्दोष था:* ''... इस ने कोई अनुचित काम नहीं किया'' (लूका 23:41)। यीशु बिल्कुल निर्दोष था।

यह एक पाप रहित व्यज़्ति की मृत्यु थी

यीशु की मृत्यु इसलिए अलग थी ज़्योंकि यह एक पाप रहित व्यज़्ति की मृत्यु थी। यीशु ने वह अपराध नहीं किया था जिसके लिए उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था। यह बात असामान्य तो है, परन्तु विलक्षण नहीं। जो कुछ हमने यीशु के विषय में कहा है कि वह किसी और के

विषय में भी कहा जा सकता है कि वह निर्दोष मारा गया।

यह बात हम किसी भी दूसरे व्यक्ति के लिए नहीं कह सकते। केवल यीशु ही है जिसने जीवन भर मरने तक पाप नहीं किया था। उसने क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय कोई अपराध नहीं किया था बल्कि उसने ज़िंदगी भर कोई पाप नहीं किया था!

इब्रानियों की पुस्तक का लेखक कहता है कि यीशु ''सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला'' (इब्रानियों 4:15)। जंगल में यीशु शैतान की परीक्षाओं में स्थिर रहा था। पर वह कहानी का अन्त नहीं था। वह तो ''सब बातों में हमारी तरह परखा गया'', फिर भी उसने पाप न किया।

यीशु ने पूछा, ''तुम में से कौन मुझे पापी ठहराता है?'' (यूहन्ना 8:46)। न उसे तब कोई पापी ठहरा सका था, और न आज तक कोई ठहरा सकता है। यीशु की मृत्यु सबसे अलग थी ज़्योंकि वह पाप रहित था!

यह पहले ही बता दिया गया था

यीशु की मृत्यु इसलिए हटकर थी ज़्योंकि इसका संदेश पहले ही दे दिया गया था। उसने अपनी ही मृत्यु को पहले से देखकर बता दिया था। पतरस द्वारा महान अंगीकार करने के बाद और यीशु द्वारा कलीसिया के आरज़्भ की बात कहने के बाद, ''यीशु अपने चेलों को बताने लगा कि अवश्य है कि मैं यरूशलेम को जाऊं ... और मार डाला जाऊं; और तीसरे दिन जी उठूं'' (मत्ती 16:21)। उस समय तक किसी ने भी उसके लिए मृत्यु दण्ड देने की मांग नहीं की थी। यीशु की प्रसिद्धि के सबसे बड़े अर्थात यरूशलेम में उसके विजयी प्रवेश के क्षण थोड़ी देर बाद आने वाले थे। पर उसे मालूम था और उसने अपने चेलों को बता दिया था कि वह मार दिया जाएगा।

वास्तव में, उसकी मृत्यु की खबर बहुत पहले दे दी गई थी। पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की थी कि वह मरेगा। उदाहरण के लिए यूहन्ना ने बताया कि सिपाहियों द्वारा यीशु के कपड़े बांट लेना (यूहन्ना 19:24), यीशु द्वारा, ''मैं प्यासा हूं'' कहना (यूहन्ना 19:28), सिपाहियों द्वारा उसकी टांगें न तोड़ना (यूहन्ना 19:36), और उसकी पसली का बेधा जाना (यूहन्ना 19:37) सब पुराने नियम की बातों का पूरा होना ही था।

नये नियम में परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए प्रचारकों ने ध्यान दिलाया कि यीशु की मृत्यु पवित्र शास्त्र की बातों का पूरा होना ही थी। उनके लिए ऐसा करना आवश्यक था ज़्योंकि यहूदियों से बातें करते हुए, उनके लिए यह सिद्ध करना आवश्यक था कि यीशु ही *क्रूस पर चढ़ाया गया* मसीहा था। यहूदी इस बात को समझ नहीं सके। मसीहा के बारे में उनकी धारणा रोम की सेनाओं के विरुद्ध युद्ध में उनकी अगुआई करते हुए उन्हें बचाने के लिए एक महान योद्धा वाली थी। क्रूस पर मसीहा की मृत्यु उनकी सोच से बाहर थी, ज़्योंकि उनका विश्वास था कि क्रूस पर चढ़ाए जाने वाले लोग श्रापित होते थे। इसलिए, पौलुस ने पिसिदिया के अन्ताकिया में यहूदियों से कहा, ''ज़्योंकि यरूशलेम के रहने वालों ... ने, न उसे पहचाना, और न भविष्यवक्ताओं की बातें समझीं; ... उसे दोषी ठहराकर उन को पूरा

किया'' (प्रेरितों 13:27)। क्रूस पर यीशु का चढ़ाया जाना पवित्र शास्त्र की बातों का *पूरा होना* ही था।

यीशु की मृत्यु पर पवित्र शास्त्र की कौन सी बातें पूरी हुईं? पुराने नियम के एक ही अध्याय भजन संहिता 22 पर ध्यान दें। क्रूस पर यीशु ने कहा, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे ज़्यों छोड़ दिया'' (आयत 1)। फिर वह मसीहा के ''मनुष्यों में नामधराई और लोगों में अपमानित होने वाले'' व्यक्ति की, उसके ठट्ठों में उड़ाए जाने, मसीहा के हाथ और पांव के बेधे जाने और उसके कपड़े बांटे जाने की बात की (पद 6-8, 16-18)। और इसमें वे स्मरणीय शब्द शामिल हैं: ''वे मेरे वस्त्र आपस में बांटते हैं, और मेरे पहरावे पर चिट्ठी डालते हैं'' (पद 18)।

पवित्र शास्त्र की ऐसी बातों का पूरा होना हमें ज़्या बताता है? यह दिज़ाने के अलावा कि यीशु की मृत्यु के विषय में पहले से बताया गया था, यह इस बात को प्रमाणित करता है कि बाइबल ईश्वरीय प्रेरणा से दी गई पुस्तक है और यीशु परमेश्वर का पुत्र है। अपनी बुद्धि से हो या सामर्थ से, कोई मनुष्य किसी व्यक्ति की मृत्यु को इतना स्पष्ट और विस्तार से नहीं लिख सकता था जितना बाइबल के लेखकों ने लिखा, *वह भी उस व्यक्ति के जन्म से सैकड़ों वर्ष पहले!* तो फिर इन भविष्यवज़्ताओं ने यह सब कैसे किया? परमेश्वर की सामर्थ से! उन भविष्यवाणियों का पूरा होना प्रमाणित करता है कि यीशु ही वह मसीहा था जिसे परमेश्वर ने भेजा है और वे भविष्यवज़्ता सचमुच परमेश्वर की प्रेरणा से लिखते थे।

इसकी योजना थी

यीशु की मृत्यु इसलिए अलग थी ज़्योंकि इसकी योजना बनाई गई थी। वह केवल एक भला मनुष्य ही नहीं था जो कानून के हाथों में पड़ गया। उसकी मृत्यु परमेश्वर की योजना के अनुसार थी। जीवन भर क्रूस ही उसकी परछाई है। वह अपने जन्म से मृत्यु के दिन तक, गुलगुता पर अपने काम को पूरा करने की ओर ही बढ़ रहा था।

पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने उन लोगों से जिन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया था, यीशु के बारे में कहा था, ''उसी को, जब वह परमेश्वर की ठहराई हुई मनसा और होनहार के ज्ञान के अनुसार पकड़वाया गया, तो तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़ाकर मार डाला'' (यूहन्ना 2:23)। यीशु को परमेश्वर की पज़्की योजना और पूर्व ज्ञान के अनुसार क्रूस पर चढ़ाया गया था। परमेश्वर ने उसकी योजना ऐसे ही बनाई थी।

इस प्रकार जो कुछ भी कलवरी पर हुआ वह दुष्ट लोगों के हाथों में परमेश्वर की योजनाओं का पड़ना नहीं था। बल्कि यह तो वैसे ही हुआ जैसे परमेश्वर की योजना थी। इससे उन लोगों का अपराध खत्म नहीं हो गया जिन्होंने यीशु को मारा था। भीड़ में से, ''उसे क्रूस दो, उसे क्रूस दो'' पुकारने वाले हर व्यक्ति ने अपनी इच्छा से ऐसा किया था। सब ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाना अपनी ही इच्छा से *चुना* था, और हर कोई उस पसन्द को चुनने के लिए यीशु की मृत्यु का दोषी था।

यीशु ज़्यों मरा? वह इसलिए मरा ज़्योंकि परमेश्वर ने उसकी मृत्यु की योजना बनाई

थी। यीशु की मृत्यु परमेश्वर की अनन्त योजना थी अर्थात परमेश्वर की न बदलने वाली योजना का भाग थी। इस कारण उसकी मृत्यु सबसे अलग थी।

इसके आस-पास होने वाली घटनाएं

यीशु की मृत्यु उसके क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय की घटनाओं के कारण अलग थी। मत्ती 27 अध्याय में चार आश्चर्यजनक घटनाओं का वर्णन है: तीन घण्टे तक एक अलौकिक अंधेरा (पद 45), ऊपर से लेकर नीचे तक मन्दिर के पर्दे का फटना (पद 51), भूकंप आना (पद 51), यीशु के पुनरुत्थान के बाद पवित्र लोगों के शरीरों का जिलाया जाना (पद 52, 53)।

इन बातों से हमें पता चलता है कि क्रूस पर कुछ अलग बात हुई थी जिसे अलौकिक कहा जाता है। इनमें इस बात का ऐलान है कि यह सब परमेश्वर की ओर से हुआ था! यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने में परमेश्वर की योजना थी! मनुष्य सूर्य को अंधेरा नहीं कर सकता लेकिन परमेश्वर कर सकता है, और उसने किया। परमेश्वर ने नीचे से ऊपर तक नहीं बल्कि ऊपर से नीचे तक पर्दे के दो भाग कर दिए ताकि कोई संदेह न रहे कि यह किसने किया है। मनुष्य भूकंप नहीं ला सकता, लेकिन परमेश्वर ला सकता है और उसने लाया। मनुष्य मुर्दों को नहीं जिला सकता, परन्तु परमेश्वर जिला सकता है, और उसने मुर्दे जिलाए। क्रूस पर इतिहास की सबसे अलग बात हुई: परमेश्वर का पुत्र मरा था। ये अद्‌भुत घटनाएं इस तथ्य की पुष्टि करती थीं।

यह हैरानी की बात नहीं है कि सूबेदार, ''जो कुछ हुआ था, देखकर अत्यन्त डर गए, और कहा, सचमुच ''यह परमेश्वर का पुत्र था'' (मत्ती 27:54)।

यह मृत्यु दूसरों के लिए थी

यीशु की मृत्यु इसलिए अलग थी ज़्योंकि यह मृत्यु दूसरों के लिए थी ज़्योंकि उसकी मृत्यु तो पहले से बताई गई, योजना थी, और परमेश्वर की ओर से थी, तो इससे परमेश्वर का कौन सा उद्देश्य पूरा हुआ? सबसे बड़ी समस्या यह है कि यदि यीशु निर्दोष था, तो परमेश्वर की योजना में उसके लिए मरना ज़्यों आवश्यक था?

यीशु अपने लिए नहीं मरा, ज़्योंकि वह निर्दोष और पाप रहित था बल्कि वह दूसरों के लिए मरा। यदि दूसरों का उद्धार करना था तो दूसरों के लिए उसका मरना आवश्यक *था।*

नया नियम ज़ोर देकर सिखाता है कि मसीह दूसरों के लिए मरा। यीशु ने कहा, ''ज़्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमिज़ बहाया जाता है'' (मत्ती 26:28)। पौलुस ने लिज़ा, ''जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा'' (रोमियों 5:8)। पौलुस के अनुसार, सुसमाचार में यह तथ्य शामिल है कि ''यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया'' (1 कुरिन्थियों 15:3)। इब्रानियों के लेखक के अनुसार मसीह इसलिए मनुष्य बना कि ''परमेश्वर के अनुग्रह से हर एक मनुष्य के लिए मृत्यु का स्वाद चखे'' (इब्रानियों 2:9)।

पुराने नियम में यशायाह 53 इसी सुसमाचार का ऐलान करता है। इसकी 4 से 6 आयतों में कहा गया है:

> निश्चय उसने *हमारे* रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया; ... परन्तु वह *हमारे* ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह *हमारे* अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; *हमारी* शांति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से *हम लोग* चंगे हो जाएं ... और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।

यीशु दूसरों के लिए मरा। इसका ज़्या अर्थ है? यीशु ने दूसरों के पाप अपने ऊपर ले लिए; उसने उनके पापों का दोष और दण्ड अपने ऊपर ले लिया। पौलुस ने कहा:

> ... परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया और उस के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया और उस ने मेल मिलाप का वचन हमें सौंप दिया है। ... जो पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उस में होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं (2 कुरिन्थियों 5:19, 21)।

क्रूस पर मरने के समय मसीह पाप बन गया था। उसने हमारे लिए नरक की पीड़ाओं को सहते हुए मेरे और आपके पापों का दण्ड सहा। नरक वह जगह है जहां परमेश्वर से अलग किए हुए लोग अनन्तकाल तक रहते हैं (2 थिस्सलुनीकियों 1:9)। मृत्यु के समय यीशु को उससे अलग कर दिया गया था जिस कारण उसने पुकारकर कहा, ''एली, एली, लमा शबज़्तनी? अर्थात हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे छोड़ दिया?'' (मज़ी 27:46)।

क्रूस पर परमेश्वर ने उसे ज़्यों छोड़ दिया *था*/ज़्योंकि यीशु उस समय पाप बन गया था! ज़्योंकि उसने हमारे सब पापों का दोष अपने ऊपर ले लिया था। परमेश्वर जो हर तरह से पवित्र है पाप को अपने सामने आने की अनुमति नहीं देता; परमेश्वर के लिए क्रूस पर मसीह से मुंह फेरना आवश्यक था ज़्योंकि मसीह तो पाप का रूप बना हुआ था। उसने अपने आप को मसीह से वैसे ही अलग कर लिया जैसे छुटकारा न पाए हुए पापी सदा के लिए उससे अलग होंगे।

यीशु ने नरक की पीड़ाओं को सहा, ज़्योंकि उसने उस दण्ड को जो पाप के लिए मिलना आवश्यक था, अपने ऊपर लिया। उसने हमारे पापों के कारण मिलने वाला दण्ड उठाते हुए, अर्थात वह दण्ड सहते हुए जो पाप के कारण मिलना आवश्यक है, पुकारकर कहा, ''पूरा हुआ'' और प्राण दे दिए।

यीशु क्रूस पर ज़्यों चढ़ा? वह दुख सहने के लिए मेरी और आपकी जगह ले रहा था। ज़्योंकि हमारे पापों का दोष अपने ऊपर लेकर उसके मरने से हमारा उद्धार हो सकता है!

ज़्योंकि उसने हमारे पापों का दण्ड चुका दिया है इसलिए हमें दण्ड चुकाने की आवश्यकता नहीं है। ज़्योंकि उसने नरक की वह पीड़ा सह ली है इसलिए हमें नरक में जाने की आवश्यकता नहीं है।

मनुष्य के इतिहास में, एक व्यक्ति की मृत्यु दूसरों के शारीरिक छुटकारे का कारण बनती रही है। पर केवल मसीह अर्थात देह में आया परमेश्वर ही, सब लोगों के पापों को अपने ऊपर लेता है। उनके पापों का दण्ड चुका सकता है। सबके लिए आत्मिक छुटकारे का अवसर केवल मसीह की मृत्यु से ही मिल सकता है।

इसके बाद एक पुनरुत्थान हुआ था

यीशु की मृत्यु इसलिए अलग थी ज़्योंकि इसके बाद एक पुनरुत्थान हुआ था। सप्ताह के पहले दिन, स्वर्गदूत ने उस पत्थर को लुढ़का दिया था जिससे कब्र पर मुहर लगाई गई थी और यीशु मुर्दों में से जी उठा। कब्र पर आने वाली स्त्रियों से उस स्वर्गदूत ने कहा, ''तुम मत डरो: मैं जानता हूं कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूंढ़ती हो। वह यहां नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है; आओ, यह स्थान देखो, जहां प्रभु पड़ा था'' (मत्ती 28:5, 6)। यीशु मुर्दों में से जी उठा था इस अर्थ में उसकी मृत्यु सबसे हटकर थी।

यीशु मुर्दों में से इसलिए जी उठा ताकि वह मृत्यु पर विजय पा सके। यदि वह मरा ही रहता, तो विजय मृत्यु की हो जाती। पर ज़्योंकि मसीह मुर्दों में से जी उठा था इसलिए उसने मृत्यु पर विजय पा ली।

इस विजय के द्वारा, वह ''पवित्रता की आत्मा के भाव से मरे हुओं में से जी उठने के कारण सामर्थ के साथ परमेश्वर का पुत्र ठहरा है'' (रोमियों 1:4)। पुनरुत्थान मसीह के परमेश्वर होने का जबर्दस्त प्रदर्शन है। यह इस बात को प्रमाणित करता है कि वह वही है जो होने का उसने दावा किया था अर्थात परमेश्वर का पुत्र।

परमेश्वर का पुत्र होने के कारण क्रूस पर उसका बलिदान लाभदायक होता है। यह तो ऐसा है जैसे मसीह ने अपनी मृत्यु के द्वारा आपके नाम एक चैक काटा हो। यह आप ही के नाम काटा गया है। यह चैक कितने का है? यह उद्धार अर्थात अनन्त जीवन के लिए काटा गया है जिसे देने की उसने आप से प्रतिज्ञा की है। इस पर हस्ताक्षर भी मसीह के ही हैं। पर पुनरुत्थान से इस चैक की पुष्टि हो जाती है। परमेश्वर की गारन्टी है कि यह चैक सही है। इसलिए हम अपने उद्धार के विषय में और भी आश्वस्त हो सकते हैं: हम इसलिए आश्वस्त हो सकते हैं ज़्योंकि मसीह हमारे लिए मरा और इसलिए भी आश्वस्त हो सकते हैं कि वह जो मारा गया था मुर्दों में से जी उठा और वह हमारा उद्धारकर्ता है।

सारांश

तो फिर यीशु एक सामान्य अपराधी की तरह ज़्यों मरा? दूसरे हज़ारों लोगों की तरह होने के बावजूद उसकी मृत्यु सबसे अलग थी।

यीशु सबसे अलग मौत ज़्यों मरा? सुसमाचार की अच्छी खबर यह है कि वह इसलिए

मरा था ताकि उसके जीवन, उसकी मृत्यु और उसके पुनरुत्थान से हमारा उद्धार हो सके।

सुसमाचार के साथ बुरी खबर भी जुड़ी हुई है। पाप वास्तविक है और वह पाप आपको दोषी ठहराएगा। जो लोग पाप करते हैं और मसीह के द्वारा प्रस्तुत किए गए उद्धार से इन्कार करते हैं उनका सदा के लिए नाश होगा। एक दिन न्याय होने वाला है और हम सबका न्याय होगा। न्याय के बाद स्वर्ग होगा या नरक, जो सदा के लिए रहेगा। जब तक आप उसकी मृत्यु के द्वारा उद्धार नहीं पाते तब तक इन तथ्यों में आपके लिए कोई सांत्वना या दिलासा नहीं है।

बेशक, पाप के तथ्यों, न्याय और नरक से आपको भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। मसीह पाप के दण्ड से जुड़े उस भय को निकालने के लिए ही मरा। आप उसकी मृत्यु के द्वारा उद्धार पाकर पाप के दण्ड से छूट सकते हैं।

पाद टिप्पणियां

[1]बर्टन कॉफमैन, *कमैन्ट्री ऑन मैथ्यू* (ऑस्टिन, टैक्स.: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1979), 470.
[2]जेम्स हेस्टिंग्स, सं., *हेस्टिंग्स बाइबल डिक्शनरी* (न्यू यॉर्क: चार्ल्स स्क्रिब्नर्स सन्स, 1898), 1:193.